लोकगीत
बधावौ

राजस्थानी भासा जुगां जूनी। बरसां लग आ लोकभासा रैयी। लोक रै अंतस री पीड़, हरख, उमाव अर हूंस री इण भासा में लोक री सगळी भावनावां नै उकेरण वाळा साहित्य रौ सिरजण होयौ। औ सिरजण साहित्य री सगळी विधावां में होयौ। उणमें लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तौ कै मिनख। औ लोकगीत राजस्थानी जनमानस रै हिरदै रा साचा उद्‌गार है; जीवता जागता चित्राम है। औ लोक री रचना है। आंरी बणगट रा जतन लोक कदैई नीं कर्‌या। औ तो मतैई उपजण वाळा अर साव निखोट अर मौलिक है। इण वास्तै ईज लोकगीतां रौ कोई अेक सरूप नीं, कोई छंद–विधान नीं होवै। राजस्थानी लोकगीतां में उणरै मूळ रूप नै छांटणौ घणौ अबखौ काम। आखी जीवाजूण अर लोकमानस में रमण वाळा आं गीतां रौ मूळ सरूप बगत अर ठौड़ रै साथै बदळतौ रैवै। राजस्थानी में आ कैवत है कै 'बारै कोसां बोली बदळै।' बोली रै फरक साथै आं लोकगीतां रै सरूप में सगळी जगै थोड़ौ–घणौ आंतरौ आयां बिनां नीं रैवै। औ तौ अपणै आप में सहज–सुतंतर, परंपरागत अर नित–नूंवां है। गेयता आंरौ खास गुण है। समाज रै हर तबकै नै लेयनै लोकगीतां री रचना होयी है। जीवण रौ कोई पहलू आं गीतां सूं अछूतौ, अणदीठौ कोनी। घटती–बधती छिंयां अर तावड़ै रै उणमांन ई मानखै रा जीवण में सुख–दुःख आवता–जावता रैवै। सुख, हरख, कोड, उछाव री घड़ियां में वौ जिकौ मैसूस करै, आं अनुभूतियां री अभिव्यक्ति ई लोकगीतां रै जलम रौ कारण बणै।

मूळ रूप सूं लोकगीतां रा दोय भेद है– 1. धारमिक लोकगीत, 2. मनोरंजनात्मक लोकगीत। धारमिक लोकगीतां में देवी–देवतावां रा गीत, बरत–बडोळियां रा गीत, संस्कारां रा गीत आवै। जदकै मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में लुगायां, मोट्यारां अर टाबरां रै सरस प्रसंगां रा गीत, खेल–तमासां रा गीत, तीज–तिंवारां रा गीत, न्यारी–न्यारी रितुवां माथै गाईजण वाळा गीत आवै।

राजस्थानी संस्कृति रूपी रूंखड़ै री जड़ां धरम सूं सींच्योड़ी है। धरम मानखै में संस्कार लावै। धारमिक लोकगीतां री अठै इघकी ठौड़। आपरै कुळ रा देवी–देवतावां री छत्तर–छिंयां में कड़ूंबौ, घर–गवाड़ी फळती–फूलती रैवै, इण वास्तै मिनख वांनै ध्यावै; मनावै अर अरदास करै। देवी–देवतावां रा गीतां नै भजन, हरजस कैवै। केई भजन अर हरजस मिनख आपरौ जलम सुधारण खातर गावै तौ केई अबखी पुळ में भजनां रै जोर सूं गैरी–गंगैर में सूता देवां नै जगावै अर मनचायौ वर पावै। पौराणिक देवी–देवतावां रा भजनां रै साथै लोकदेवियां– करणी माता, जीण माता, चौथ माता, सुसाणी माता अर लोकदेवतावां में रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी आद रा गीत गांव–गांव अर ढाणी–ढाणी में गूंजै। इण भांत रा गीत भजन मंडळियां सांवठै सुर में गावै अर साथै लोकवाद्यां में नगाड़ा, मंजीरा, इकतारा अर रावण–हत्था री धुन होवै तौ भजनां में सवायौ रस आय जावै।

राजस्थान तीज–तिंवारां रौ प्रदेस। तीज–तिंवारां रै साथै जुड़्योड़ा है लुगायां रा बरत–बडोळिया अर आंरै सागै है लोकविस्वास। सावण री तीज होवौ अर भलां ई भादवै री काजळी तीज, हींडौ हींडती गोरियां गीत गावै अर गीतां रै गड़कै परदेसां गयोड़ै पीव नै घरै आवण री मनवार करै। तीज माता रौ अवास करै अर अमर–सवाग री अरदास करै। चेत मास में गिणगौर पूजती कंवारी कन्यावां चोखौ घर अर वर मांगै तौ सवागण नार अमर चुड़लै री आस लियां गीत गावै, गौर माता नै मनावै।

इणी भांत होळी अर दीवाळी रा गीत गाईजै। हरेक महीनै में आवण वाळा छोटा–बडा तिंवारां नै गीतां री गोख सूं लाडां–कोडां मनावण री रीत है। होळी रा दिनां में सायनी–साथणियां लूरां लेवती मीठा ओळबा सुणावै अर मसखरियां चालै, फागण गाईजै। मोट्यार चंग अर डफ रै साथै धमाल राग में फाग गीत गावै अर कीं दिनां खातर खुद नै ई बिसर जावै। वै आपरै मन रौ चाव गीतां रै ओळावै पूरौ करै।

दीवाळी रा दिनां में टाबर मतीरां में नैनी–नैनी जाळियां बणावै। उणरै ऊपर ढेबरी काट'र मांय 'दीवौ' मेल'र रात में गीत गावै अर घर–घर औ संदेसौ देवै कै 'दीवाळी रा दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।' दीवो कठैई 'बडौ' नीं होय जावै (बुझै नीं), इण वास्तै मिनखां में औ विस्वास जगावै कै 'घालौ तेल, बधै थांरी बेल।'

जीवण में संस्कारां रौ घणौ मोल, जीवण रा सोळा संस्कार मानीजै। जलम सूं लेय'र सौ बरस पूगै जित्तै मिनख आं संस्कारां रै गेलै–गेलै चालै। संस्कारां सूं जुड़्योड़ा है लोकगीत। घर में टाबर रौ जलम होवै तौ जच्चा रा गीत, सूरज पूजा रा गीत अर जळवा पूजण रा गीत गाईजै। इण मौकै सासू, बऊ, नणद–भौजाई, देराणी–जेठाणी रा गीत ई गाईजै, जिणमें जीवण रा खारा–खाटा अर मीठा अनुभव होवै। पैली होळी आवै जद टाबर री ढूंढ करै, उणरा गीत, जलम केसां नै बडा करै तौ झडूलै रा गीत गाईजै। जनेऊ धारण करावती बगत उणरा गीत गाईजै तौ ब्याव रै मौकै विनायक, मायरो, वंदोळी, कामण, कळस, पीठी, तेल, हळदी, तोरण, फेरा, कुंवर–कलेवौ, जुआ–जुई, सीख रा गीत गावण री रीत है। ब्याव रा गीतां नै 'बन्ना' कैवै जिणमें आपरै परिवार वाळां रा नांव लेय'र काकोसा, भाबोसा, दादोसा इत्याद रा संबोधन गीत गाईजै। इण मौकै भगवान नै पति रूप में पावण री कामना करती 'बन्नी' जांणै भगवान जैड़ो वर मिलै। इण वास्तै वा कांई मांगै–

म्हैं तो मांगूं अयोध्या रो राज, पीहर म्हारो जनकपुरी।
म्हैं तो वर मांगूं भगवान, छोटो देवर लिछमणजी।।

जीवण री सगळी अवस्थावां में टाबरपणो आपरी न्यारी ठौड़ राखै। टाबरां रा गीतां में मेवाड़ रौ 'हरणी' गीत, जिणनै टाबरिया रमता–रमता गावै–

हरणी हरणी थूं क्यूं दूबळी अे,
चाल म्हारै देस ! राता गंउवां की घूघरी अे,
नूंवी तिल्ली को तेल...।

जीवण हरमेस रंगीलौ नीं होवै। सुखां रै साथै दुःख ई जुड़्योड़ा है। अठै रा गांवां अर ढाणियां में रैवण वाळा मिनखां रौ जीवण घणौ अबखौ अर दो'रौ। सियाळै री ठंडी रात में पांणत करता करसा अर लांबी जातरा करता कतारिया आं लोकगीतां सूं आपरै बगत नै सरस बणावै। मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में ई चिरमी, हिचकी, ईंडाणी, जीरौ अर केई ओळूं जैड़ा सिणगारू गीत ई गाईजै। पसु–पंखेरूवां साथै मिनखां रौ घणौ जूनौ संबंध रैयौ है। आं पंखेरूवां रै मिस आपरै पीव नै संदेसौ, तौ कदैई मीठा ओळबा देवती गोरड़्यां गीतां में आपरी पीड़ उकेरै। कुरजां, सूवटौ, कागलियौ, मोरियौ जैड़ा गीतां में अै पंछीड़ा ई विरहणियां रा सांचा मीत बणिया है तौ कदैई संदेसवाहक रौ काम सार्‌यौ है।

प्रकृति नै मानखौ कीकर भूल सकै? बरस में आवण वाळी रितुवां रौ वरणाव लोकगीतां में होयौ है तौ चौमासै रौ चौगणौ चाव गीतां में जबरौ राचै। बिरखा माथै ई मानखै रौ सगळौ दारोमदार है। बिरखा ऊमटै, मेह वूठै तौ बरस सो'रौ निकळै। चौमासै में खेतां री पगडांड्यां चालता हाळी–बाळदी चौमासै रा गीत गावै, इंदर राजा नै मनावै अर बिरखा रा लाड–कोड करै। लोकगीतां रौ वरणाव कठै

नीं होयौ? बात करां जित्ती ई थोड़ी। जीवण री कठोरता आं गीतां में है तौ मीठास रौ ई पार कोनी। आं गीतां में वौ दरद है, वा पीड़ है कै पासाण हिम ज्यूं गळ जावै, वौ इमरत है कै भलांई अेक पल वास्तै ई सही, पण! मानखौ जीव जावै, गीतां री सरसता में डूब'र खुद नै ई भूल जावै। टाबरां नै चिगळाय'र हींडै में सुवाड़ण रौ जादू आं गीतां में है तौ सूतोड़ां नै जगावण रौ जोर ई आं गीतां में लाधै।

लोकगीतां में समाज रा रीत–पांत, परंपरावां, लोकविस्वास अर उणरी भावनावां जुड़्योड़ी है। आं में किणी अेक मिनख रौ नीं, समुदाय रौ नीं, आखै समाज रौ सुर है। किणी समाज री संस्कृति अर परिवेस नै जाणण वास्तै उठै रा लोकगीतां सूं बध'र दूजौ साधन कोनीं। लोक–साहित्य विधावां रौ अथाग समदर है तौ लोकगीत उणसूं निकळण वाळा अमोलक रतन।

राजस्थानी संस्कृति री छिब अर आखै जीवण री सरसता रा दरसण जठै करीजै, उण मांयली अेक कड़ी है– 'बधावां' री। बधावौ– हरख–उमाव, लाड–कोड रौ छौळां चढियो समदर। बधावौ– जीवण री वां घड़ियां री सुखद अभिव्यक्ति, जठै घर–गिरस्थी रा सगळा सुख सैंधरूप होय जावै। घर में बेटा रौ जलम होवै, चायै बेटा–बेटी रौ ब्याव कै पछै नूंवै घर में रैवास रौ मौहरत होवै, आं अैढां माथै राग–रंग, उच्छब अर रस री बिरखा होवै तौ हिये में हरख अर राजीपै रौ पार नीं रैवै। आं सुभ अवसरां माथै 'बधावौ' गीत गाईजै।

राजस्थान रा मध्यकालीन सामंती समाज में जुद्ध डावै हाथ रौ खेल हौ। धरती, धरम अर मरजाद राखण वास्तै, तौ कदैई बदळै री भावना सूं, राज री सीमावां बधावण सारू तौ कदैई वचन–पाळण, स्वामिभक्ति रै कारण भांत–भांत रा जुद्ध अठै लड़ीजता रैया। आं जुद्धां में राजा, सामंत, सरदार, वीर–सैनिक, ओहदैदार, मंत्री अर सेना नै रासण पूगावण री खैचल वास्तै व्यौपारियां इत्याद नै केई–केई महीनां घर सूं अळगौ रैवणौ पड़तौ, जठै आव–जाव घणौ दो'रौ, चिट्ठी–पतरी रौ ई काम कोनीं। उण बगत घरां में रैवणिया हा तौ फगत बूढा, बेमार, टाबर अर धणी रै घरै आवण री आस में कंवळै ऊभी उडीकती, काग उडावती, सूनौ मारग भाळती अर झुरती वां वीर–जोधारां री विरहणियां। वै विजोग री वां घड़ियां नै बिलमावण री अैळी खैचल करती। आपरी कुळ–मरजाद री लिछमण रेखा में बंध्योड़ी सीलवंती– सतवंती कुळ–बऊवां री अैड़ी दसा में जद किणी रौ प्रवासी प्रियतम अचाणचक घरै आय पूगौ तौ मेड़ी रा गोखड़ा सूं प्राण–पिया नै निरखती वा विजोगण, सरब सवागण बण आपरा भाग सरावै अर 'सुख री घड़ी' में उणरौ मन गावण लागै। औ 'बधावौ' गीत स्यात उणरै हियै री उण बगत री उकेल ही। गीत रा भाव इण भांत है– आज आंगणै में जाणै सोळै सूरज अेकण साथै ऊगग्या होवै। इण सुख रौ वरणाव वा किंयां करै ? लंबै विछोह पछै संयोग रौ सुख सबदां नीं कथीजै। उण सुख नै भोगण वाळौ, उण स्थिति नै झेलण वाळौ ई जाण सकै। 'गूंगै रा गुळ' जैड़ी सुख री घड़ियां में नायिका थोड़ी ताळ वास्तै नारी सुलभ लाज, संस्कार, घर–परिवार वाळां रै संकै अर मरजाद नै जाणै भूल जावै, मन रा कोमल भाव इण भांत गीत रौ रूप लेय लेवै। वा आपरै पति रा पौरुस, वीरता अर दरप सूं दीपती आंख्यां री बडाई 'झीणी केसर' सूं करै। अैड़ी अनूठी उपमा कठैई नीं लाधै। तीखा उणियारा माथै ओपता नाक वास्तै कैवै कै वैमाता जाणै निकमी बैठ'र (फुरसत, नेठाव सूं) घड़ी है। औ लोकप्रचलित ओखाणौ है। इणनै परोटण सूं नाक वास्तै दूजी ओपमावां री दरकार ई मैसूस नीं होवै अर उणरौ फूठरापौ आपै ई प्रगट होय जावै। अैड़ा घणा रूपाळा प्रियतम नै निरखण रौ लोभ है पण ! खिण अेक पछै स्यात उणनै सोझी आ जावै– कुळ मरजाद

अर बडेरां सांम्ही अेकटक, खरी मीट दियां उण रूप–रूड़ा नै कियां देखै ? झीणै घूंघटै री ओट में ईज उणरै कानां रा गजमोती कांई इधका लागै जाणै 'महलां में दीपती दिवलै री जोत।' नायक री कमर में बंधी कटारी वीरोचित्त स्वभाव रौ प्रतीक है तौ नेवज (प्रसाद, भोग) सूं भर्‌योड़ी थाळी जैड़ी उणरी हथाळियां अस्त्र–सस्त्रां नै चलावण में उणरी खिमता दरसावै। इण छोटै'क गीत में नायक रै रूप अर गुणां री कैड़ी'क मरमपरसी अर सजीव अभिव्यक्ति होयी है। इणरी भासा सहज, सरल अर प्रसाद गुण वाळी है। सगळा सबद सहज ही समझण जोग है। इण लोकगीत में नायिका आपरै धणी वास्तै केई संबोधन सबदां नै काम लिया है ज्यूंकै 'नणदल बाई रा वीरा', 'सुगणी सासू रा जाया', 'कंवर बाई रा वीरा' इत्याद। राजस्थानी संस्कारां मुजब लुगाई आपरै धणी रौ नांव नीं लेवै अर दूजा संबोधनां सूं उणनै बुलावै। परिवार में आपसरी रा मीठा संबंधां नै ई अै संबोधन उजागर करै। 'सुगणी सासू रा जाया' सूं अरथ है कै आछा गुणां अर ऊजळा संस्कारां वाळी मां रै जैड़ौ उणरौ बेटौ ई गुणां रो गाडौ है, क्यूंकै 'रूंखां जैड़ा छोडा होवै।' सासू री बडाई सूं खुद रै धणी री बडाई करण में कित्ती वाक् चतुराई है। मूळ 'बधावौ' गीत इण भांत है–

बधावौ

माथै रौ दुमालौ कोई फूलां के रौ भारो जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

कानां रा गजमोती, आडै घूंघट जोती जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।

आंखड़ल्यां रौ पाणी, कोई झीणी केसर छाणी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

नाकड़लै री डांडी कोई निकमी बैठ'र मांडीजी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

हाथां री हथेळी कोई नेवज री बड़ थाळी जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।

आंगणियै में ऊभा कोई सोळह सूरज ऊग्या जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

सुख री घड़ी स्यूं गोरी रौ मन राजी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

⌘⌘

अबखां सबदां रा अरथ

दुमालौ=साफौ, पाघड़ी। सुगणी=गुणां वाळी। बीरा=भाई। ऊभा=खड़्या। नेवज=प्रसाद, भोग।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी बरसां लग कैड़ी भासा रैयी–
   (अ) डिंगळ भासा (ब) लोकभासा
   (स) पिंगळ भासा (द) गुजराती भासा
   ( )

2. लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तौ कै जूनौ है–
   (अ) महाकाव्य (ब) वेद
   (स) मिनख (द) राजस्थानी–काव्य
   ( )

3. लोकगीतां रौ मूळ सरूप मिळणौ घणौ दो'रौ है, क्यूंकै–
   (अ) अै लोक री रचना है अर बारै कोसां बोली बदळै
   (ब) गेयता आंरौ खास गुण होवण रै कारण
   (स) परंपराऊ होवण रै कारण
   (द) आं मांय सूं अेक ई नीं
   ( )

4. बाळपणै में खेल रै साथै गाईजण वाळौ गीत है–
   (अ) मेवाड़ रौ 'हरणी' गीत (ब) मारवाड़ रौ 'जल्लो' गीत
   (स) गोडवाड़ रौ 'चिरमी' गीत (द) मेवाड़ रौ 'झुरणी' गीत
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीत री सबसूं मोटी विसेसता कांई है?
2. लोकगीत किणरै हियै रा उद्‌गार है?
3. ब्याव में गाईजण वाळा गीतां नै कांई कैवै?
4. गणगौर किण मास में आवै, लुगायां इण दिन कांई करै?
5. पंखेरूवां सूं संबंधित दो लोकगीतां रा नांव लिखौ।

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में कांई–कांई वरणन होयौ है?
2. हाळी–बाळदी अर कतारिया गीत क्यूं गावै?
3. लोकगीतां में कांई जोर है?
4. आखै जीवण री सरसता रा दरसण किण में होवै, उणरी अेक कड़ी कांई है?
5. मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में आवण वाळा चार गीतां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में सांवठी संस्क्रति रा दरसण होवै। इण बात रौ खुलासौ करौ।
2. लोकगीत 'बधावा' रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) माथै रौ दुमालौ कोई फूलां के रौ भारो जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

(ब) आंखड़ल्यां रौ पाणी, कोई झीणी केसर छाणी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

(स) हाथां री हथेळी कोई नेवज री बड़ थाळी जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।